धुंधली नहीं हुई हैं छतरपुर में भूख से मौतें

अरविंद

बहुतेरे लोग भले इनकार करें कि पलामू में जमींदारी व सामंती समाज के नामोनिशान नहीं हैं. लेकिन इलाकों में घूमते हुए ऐसे अवशेष देखे जा सकते हैं.यह चाहे सामंती उत्पादन व्यवस्था हो या फिर कोई पुरातन परंपरा. कई दशक पहले तक पलामू में कमवउती और हरवाहा नाम से चर्चित बंधुआ मजदूरी का काफी शोर था. पीयूसीएल से जुड़े जेम्स हेरेंज बताते हैं कि बंधुआ मजदूरी के नये मामले गढ़वा के बांदू गांव में सामने आये हैं, जहां आदिवासी समुदायों से आनेवाले 14 मजदूर चंद हजार रुपयों के लिए दशक भर से बंधुआगीरी कर रहे थे.

डालटनगंज से छत्तरपुर करीब पचास किमी है. रास्ते में पड़वा मोड़, सिंगरा खुर्द, कजरी, लोहड़ा, नावा, तुकबेरा, कंडा आदि पाटन व विश्रामपुर प्रखंड के इलाकों से छत्तरपुर पहुंचा जा सकता है. बीच में राजहरा कोलियरी पड़ता है. छत्तरपुर बाजार से थोड़ा पहले तेलारी मोड़ के पास ओकराहा गांव पड़ता है, जो रुदवा पंचायत का हिस्सा है. बीते साल छत्तरपुर के छह लोगों- आशादेवी, सीताराम भुइयां, पनवा कुंवर, प्रभा देवी, अलियार कुंवर, यमुना सिंह खरवार के भूख से मरने की खबर ग्राम स्वराज अभियान ने दर्ज की है. इनमें ओकराहा में 2009 में 45 वर्षीय यमुना सिंह खरवार भी हैं. झारखंड में 27 फीसदी आदिवासी हैं, वहीं पलामू में आदिवासी व दलित 40 फीसदी से ज्यादा हैं. खरवार व चेरो यहां के बड़े आदिवासी समूह हैं.

ओकराहा गांव पहाड़ और पत्थरीले टीलों में बसा हुआ है. खेती बर्बाद होने के कारण खरवार लोग मजदूरी करते हैं. दिवंगत यमुना सिंह की विधवा देवमनिया कुंवर बताती हैं कि बीते सितंबर में अनाज की कमी के कारण यमुना सिंह कुपोषित थे. तब पंद्रह दिन तक तबीयत खराब थी. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज कराने के बाद भी राहत नहीं मिली. मरने के बाद आनन-फानन में छत्तरपुर बीडीओ की तरफ से पारिवारिक राहत के रूप में दस हजार रुपये दिये गये थे. एक क्विंटल अनाज भी मिला था. लेकिन पैसा व अनाज भोज-भात में खत्म हो गया. चार क्लास तक पढ़े उनके 26 साल के बेटे सत्यनारायण कहते हैं कि अब चाहे कोई भूख से मरे या कोई बीमारी से या बुढ़ौती में, रीति-रिवाज के कारण भोज-भात तो करना ही पड़ता है. गांव में पांच साल से सूखे का असर साफ दिखता है. आहर में पानी नहीं. गहरे कुएं तक मार्च में सूख गये. गांव के विनोद सिंह बताते हैं कि . मनरेगा के बाबत बताते हैं कि दस दिन के काम के बाद अफसर लोग जॉब कार्ड व बैंक पासबुक ले लेते हैं. फिर बिचौलिये पोस्ट ऑफिस से साठगांठ कर पैसा बटोर ले जाते हैं. ओकराहा से चलते हुए अमरदेव बताते हैं कि पास के रुदुवा गांव में तीस साल के सीताराम भुइयां की मृत्यु 7 अगस्त 2009 को हुई थी.

छत्तरपुर से जपला जानेवाली सड़क से जाते हुए मदनपुर के बाद पिंडराही आता है. यहां कृष्णा सिंह खरवार की 30 बरस की पत्नी आशा देवी की मृत्यु हो गयी थी. गांव की कलसी देवी बताती हैं कि -'अशवा बच्चा पइदा करे के बाद मरलइ. बड़ी दिन से भुखे रहत हलइ. उधार पइचा करके जिनगी चलत रहलइ. ओकरा मरे के बादं बबुआ जैसे-तैसे एक महीना जिंदा रहलइ. फिनु तो एगो आउर बचिया भी दू महीना बाद माई-माई चिला कर मू गेलइ.'

पलामू के किसी भी देहात में चले जाइए, औरतों की स्थिति बदतर है. एनएफएचएस-3 के अनुसार झारखंड में 70 फीसदी महिलाएं एनेमिक हैं. प्रति लाख 312 महिलाओं की प्रसवावस्था के दौरान मृत्यु हो जाती है. संस्थागत प्रसव मात्र 31 फीसदी है. आशा देवी की मृत्यु के बाद बीडीओ पहुंचे थे. 500 रु नकद और 20-25 किलो अनाज की मदद भी की. लेकिन किसी के मरने से सब कुछ थम नहीं जाता. जीने की नयी जद्दोजहद चलती रहती है. इसलिए मृतक आशा के पति कृष्ण जयपुर में लोडिंग का काम करने अभी एक सप्ताह पहले ही गये. उनकी 16 साल की बहन मालती बताती है कि 'अबही घर में एक दो सेर चाउर हई. लाल कार्ड महीना नगीज करके अनाज मिले हइ.' इन इलाकों में कई चेरो व खरवार महिलाएं हष्ट-पुष्ट दिखीं. लेकिन मातृत्व दर से लेकर अधेड़ उम्र में कुपोषण से नहीं लगता कि वे राष्ट्रीय जीवन प्रत्याशा के आंकड़े को छू पायेंगी.

छत्तरपुर के पश्चिमी इलाके में पिंडराही, मदनपुर, नवडीहा, लोहराही, भरवाडीह हैं, वहीं पूरब में डगरा, करकटा, सरईडीह, चिरू, नानुदाग हैं. छत्तरपुर के डागरा पंचायत में तेनुडीह आदि इलाकों में टीबी का भारी प्रकोप है. पंचायत के तहत 32 गांव पड़ते हैं. पर पलायन के लिए लोग औरंगाबाद के चावल मिलों व करबंदिया के क्रेशर में काम करते हैं और बदले में टीबी की बीमारी पाते हैं. पौष्टिक भोजन की कमी के कारण बच्चों में कुपोषण तो है ही, उन्हें पिता व अभिभावकों से सौगात में टीबी की बीमारी भी मिल रही है. महीना भर पहले पलामू में कमिश्नर पद पर रहे **आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव सुरेंद्र सिंह** कहते हैं कि 'पलामू क्षेत्र में बारिश की कमी और बरसाती नदियों के कारण जल स्तर काफी नीचे चला गया है. औद्योगिक, घरेलू तथा खेती के हानिकारक कचड़े के जमा होने से पानी प्रदूषित हो गया है. फ्लोराइड व आर्सेनिक युक्त पानी पीने से पेट की बीमारियां, डायरिया आदि से लेकर अपंगता आम है.'

(जारी)

(सीएसडीएस के इनक्लूसिव मीडिया फेलोशिप के तहत लिखी गयी रिपोर्ट.)

PRABHAT KHABAR
27 JUNE, 2010
RANCHI